DSSSB TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

भाषाओं का वर्गीकरण

Part -3

LIVE 24-04-2024 05:00 PM

अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating Languages) :

✓ अयोगात्मक भाषाओं को 'निरवयव' या 'व्यासप्रधान' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इन्हें "Inorganic" भी कहते हैं।

✓ इस वर्ग की भाषाओं में प्रयुक्त शब्द, मात्र अर्थतत्त्व प्रकृति ही होते हैं । प्रत्यय लगाकर उनके विभिन्न रूप नहीं बनते ।

✓ अतः इस वर्ग की भाषाओं को धातुप्रधान या एकाक्षर भी कहते हैं। इन भाषाओं में रूपतत्त्व का काम 'स्थान', 'निपात शब्द' या 'सुर' से लिया जाता है ।

वाक्य में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध तो होता है परन्तु उस सम्बन्ध को बताने के लिए शब्द की मूल प्रकृति में कोई विकार नहीं होता। सम्बन्धों का निर्णय मुख्यतः तीन आधारों पर किया जाता है।

(i) वाक्य में उस शब्द के स्थान,

(ii) उस शब्द के साथ प्रयुक्त 'निपात शब्द' या

(iii) उस शब्द में प्रयुक्त सुर (लहजा या उदात्तादि स्वर) के द्वारा होता है।

अतः इस वर्ग की भाषाओं में स्थान, निपात तथा सुर का बहुत महत्त्व है।

अयोगात्मक वर्ग की प्रमुख भाषा चीनी है। इसके अतिरिक्त सूडानी, तिब्बती, बर्मी तथा स्यामी भाषाएँ भी इसी वर्ग की हैं।

स्थान के आधार पर अर्थ निर्णय

कुछ भाषाओं में शब्द के स्थान बदल देने से ही उसका अर्थ बदल जाता है। इस वर्ग में चीनी भाषा प्रमुख है। चीनी भाषा के निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों का स्थान बदल देने पर उनका अर्थ भी बदल जाता है। प्रथम वाक्य में तीन शब्द है जिनका स्वतंत्र अर्थ इस प्रकार है-

शब्द		अर्थ
न्गो	=	मैं
नी	=	तू
ता	=	मारना

इन तीन शब्दों को, वाक्य में यदि-

न्गो ता नी।

इस क्रम से रक्खा जाय, तो अर्थ होगा-

मैं मारता हूँ तुझे (मैं तुझे मारता हूँ) ।

नी ता न्गो।

तो अर्थ भी इस प्रकार बदल जायगा :-

तू मारता है मुझे (तू मुझे मारता है)।

निपात शब्द के आधार पर अर्थ निर्णय

उन पूरक शब्दों को जो वाक्य में अर्थ का बोध कराने में सहायक होते हैं निपात कहते हैं । निपातों को रिक्त, शब्द भी कहा जाता है।

चीनी आदि भाषाओं में 'निपात' शब्द की सहायता से अर्थ बोध कराया जाता है।

उदाहरणार्थ - "मु (माता) छिहं (का) त्सु (पुत्र) ।

इस वाक्य में 'छिहे' एक निपात के रूप में प्रयुक्त है, जो यह स्पष्ट करता है कि पुत्र माता का ही है, अन्य किसी का नहीं।

'छिह' (का) केवल सम्बन्धकारक का ही कार्य कर रहा है, यद्यपि इसके अन्य स्वतन्त्र अर्थ 'जाना', 'वह' आदि भी है।

'निपात' द्वारा अर्थ- परिवर्तन का उदाहरण निम्नलिखित वाक्य में देखा जा सकता है-

"वांग (राजा) पाओ (रक्षा करना) मिन (जनता) ।

अर्थात् 'राजा जनता की रक्षा करता है।

किन्तु इस वाक्य में 'वांग' के बाद 'छिह' निपात का प्रयोग करने पर अर्थ होगा-

वांग छिह पाओ मिन = राजा द्वारा रक्षित जनता ।

निपात से इन भाषाओं में निम्नलिखित दो काम लिये जाते हैं-

(i) शब्दों का अर्थों में परिवर्तन, तथा

(ii) शब्दों के अर्थों की सूक्ष्मता को प्रकट करना ।

सूर (लहजा या Tone) के आधार पर अर्थनिर्णय

किसी वर्ण के उच्चारण के ढंग को सुर कहते हैं। संस्कृत में वैदिक भाषाओं में उदात्त - अनुदात तथा स्वरित स्वरों का प्रयोग होता था। उन्हें भी यहाँ " सुर " कहा गया है। दूसरे शब्दों में आवाज में उतार-चढ़ाव लाकर बोलना सुर कहलाता है । अयोगात्मक वर्ग की भाषाओं में 'सुर' के प्रयोग से अर्थों में बड़ा भारी अन्तर हो जाता है। चीनी भाषा का एक शब्द उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

'क्षेइ' शब्द में 'इ' (स्वर) का उच्चारण यदि उदात्त हो, तो इसका अर्थ होगा- 'दुष्ट'; किन्तु 'इ' का उच्चारण यदि अनुदात्त हो, तो अर्थ होगा- 'सम्मान्य' । इस प्रकार एक ही विशेषण, भिन्न सुरों (उदात्त और अनुदात्त) के भेद से नितान्त विरोधी अर्थों को प्रकट करता है ।

उदाहरण के लिए ब ब ब ब" इन चार अक्षर शब्दों का उच्चारण चार विभिन्न सुरों में करने से अर्थ होगा "तीन महिलाओं ने राजा के कृपापात्र के कान उमेठे"। इसी प्रकार 'येन्' इस एक शब्द का अर्थ भी सुर-भेद से चार प्रकार का हो जाता है- हँस, धुँआ, नमक और आँख । इससे प्रकट होता है कि इन भाषाओं में सुर आदि के प्रयोग द्वारा शब्दों की कमी को दूर करने का उपाय किया गया है।

निष्कर्ष यह है कि आयोगात्मक वर्ग की भाषाओं में स्थान, निपात तथा सुर का बड़ा महत्त्व है। इन भाषाओं का व्याकरण इन्हीं का विवेचन करता है। यद्यपि सामान्य रूप से इस वर्ग की भाषाओं में इनका महत्त्व है, तथापि कुछ भाषाओं में इनमें से किसी एक का महत्त्व अधिक रहता है। उदाहरणार्थ अयोगात्मक वर्ग की भाषाओं में से-

- चीनी भाषा में स्थान तथा सुर का,
- सूडानी भाषा में स्थान का,
- बर्मी - तिब्बती में निपात का, तथा
- स्यामी भाषा में सुर का विशेष महत्त्व है।

1. अश्लिष्ट या प्रत्ययप्रधान भाषाए (Agglutinative Languages):

'श्लिष्ट' का अर्थ है अत्यधिक चिपका हुआ। इसमें निषेधात्मक 'अ' जोड़ने से अर्थ हुआ, जो अत्यधिक चिपका हुआ नहीं है । (इसमें निषेधात्मक 'अ' जोड़ने से अर्थ हुआ, जो अत्यधिक चिपका हुआ नहीं है)। फिर भी चिपका हुआ तो है ही । तिल - तण्डुल

अतः अश्लिष्ट वर्ग की भाषाएवे हैं, जिनमें प्रत्यय (सम्बन्धत्व या रूपतत्त्व) प्रकृति (अर्थतत्त्व) से चिपका हुआ तो रहता है, किन्तु इतना अधिक चिपका हुआ नहीं कि उसे पथक् रूप में न जाना जा सके। इन भाषाओं से प्रत्यय पथक् पहचाना जाने वाला होता है ।

'बन्तु' 'युराल' 'अल्ताई' द्रविड़ भाषा-परिवारों की अधिकांश भाषाएँ तथा मुण्डा भाषाएँ इसी वर्ग की हैं।

अल्ताई परिवार की तुर्की भाषा से एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है

अत् (घोड़ा) + लर (बहुवचन का प्रत्यय) = अत्लर (अनेक घोड़े) ।

प्रत्यय प्रधान भाषाओं को पाँच वर्गों में बाँटा गया है।

(i) प्रत्यय-संयोगी (Prefix-agglutinative) : इन भाषाओं में प्रत्यय, प्रकृति के पूर्व में जुड़ता है। दक्षिणी अफ्रीका के 'बन्तु' भाषा-परिवार की 'काफिरी' भाषा का उदाहरण -

'काफ़िरी' भाषा के कुछ सर्वनाम इस प्रकार है-

जे = वह

नि = वे

ति = हम

इन सर्वनामों में कर्मवाचक प्रत्यय 'कु' जोड़ने पर इनका रूप होगा-

कुजे = उसको

कुनि = उनको

कुती = हमको

'बन्तू' परिवार की ही एक अन्य भाषा 'जुलू' से भी एक उदाहरण द्रष्टव्य है। 'जुलू' भाषा में 'न्तु' शब्द का अर्थ है 'मनुष्य'। इस भाषा में वचनसूचक प्रत्यय इस प्रकार हैं-

उमु = एकवचन का सूचक प्रत्यय ।

अब = बहुवचन का सूचक प्रत्यय |

एक मनुष्य का बोध कराने के लिए 'न्तु' के पूर्व 'उमु' प्रत्यय जुड़कर रूप बनेगा-

उमु = एक

न्तु = आदमी

उमन्तु = एक आदमी

इसी प्रकार अनेक मुष्यों के लिए

अब (अनेक) + न्तु (आदमी) अबन्तु = अनेक आदमी |

(ii) परप्रत्यय-संयोगी (Suffix-agglutinative) : इन भाषाओं में प्रत्यय, प्रकृति के 'परे' अर्थात् बाद जुड़ता है 'यूराल', 'अल्ताई' तथा 'द्रविड़ - भाषा परिवार इस वर्ग में आते हैं। इस वर्ग की भाषाओं में पहले प्रकृति, फिर वचनसूचक प्रत्यय तथा उसके बाद कारकसूचक प्रत्यय लगता है। उदाहरण - 'अल्ताई' परिवार की 'तुर्की' भाषा से-

अत् (प्रकृति) = घोड़ा

+ लर् (बहुवचनप्रत्यय) = घोडे = अत्लरी = घोड़ों को ।

+ ई (कर्मकारकप्रत्यय) = को

(iii) मध्यप्रत्यय-संयोगी (Infix-agglutinative) : भारत के 'मुण्डा' भाषा - परिवार की 'संथाली' भाषा इसी वर्ग की है । संथाली भाषा में प्रत्यय, प्रकृति के मध्य में जुड़ा है। उदाहरण-

मंझी शब्द का अर्थ है एक मुखिया ।

मंपझी = अनेक मुखिया

बहुवचन का सूचक प्रत्यय है 'प', 'मझि' शब्द के मध्य में प जुड़कर रूप बनेगा-

मपंझि जिसका अर्थ होगा अनेक मुखिया ।

(iv) पूर्वान्त प्रत्यय - संयोगी (Prefix-Suffix-agglutinative) : इस वर्ग की भाषाओं में प्रत्यय, प्रकृति के पहले तथा प्रकृति के बाद में, दोनों स्थानों पर लगता है।

न्यूगिनी द्वीप की 'मफोर' भाषा इसी परिवार की है।

उदाहरण- म्न का अर्थ है सुनना इनके पूर्व ज और अन्त में उ लगाकर रूप बनता है

जम्नउ जसका अर्थ होगा मैं सुनता हूँ तुझे अर्थात् मैं तेरी बात सुनता है।

श्लिष्ट या विभक्तिप्रधान भाषाएँ (Inflecting Languages):

इस वर्ग की भाषाओं में मूल प्रकृति के साथ विभक्तियाँ जोड़ने पर मूल प्रकृति में भी परिवर्तन हो जाता है। इसलिए इस वर्ग की भाषाओं को भी विभक्तिप्रधान भाषाएँ या श्लिष्ट योगात्मक कहा जाता है।

यद्यपि प्रत्यय प्रधान और विभक्ति प्रधान दोनों ही प्रकार की भाषाओं में प्रत्यय जुड़ते हैं परन्तु दोनों में अन्तर यही है कि प्रत्यय प्रधान भाषाओं में प्रत्ययों की पृथक पहचान बनी रहती है। शब्द रूप में से यदि प्रत्यय को निकाल दिया जाए तो मूल प्रकृति रह जाती है । परन्तु विभक्ति प्रधान भाषाओं में ऐसा नहीं होता ।

शब्द रूप में से यदि प्रत्यय निकाल दिया मूल प्रकृति अपने पूर्व रूप में नहीं रहती । उदाहरण के रूप में संस्कृत का अपठत् रूप देखिए । इसमें से यदि त् प्रत्यय प्रथक् किया जाए तो अपठ् रूप रहता है। जो मूल प्रकृत नहीं है। मूल प्रकृति है पठ् ।

प्रत्ययप्रधान भाषाओं की अपेक्षा विभक्तिप्रधान भाषाओं की रूप-रचना क्लिष्ट होती है। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन तथा अरबी इसी प्रकार की भाषाएँ हैं । श्लिष्ट या विभक्तिप्रधान भाषाओं को भी उपवर्गों में बाँटा जा सकता है-

1. अन्तर्मुखी विभक्तिप्रधान भाषाएँ: इसमें विभक्ति, प्रकृति के अन्दर ही जुड़ती है। 'सामी परिवार की प्रमुख भाषा अरबी तथा 'हामी परिवार' की मिस्री भाषाएँ इसी प्रकार की है। इन भाषाओं की प्रकृति (मूलशब्द) में प्रायः तीन व्यजन ध्वनियाँ होती है तथा प्रत्यय प्रायः स्वर होते हैं। उदाहरण, अरबी भाषा से-

(i) प्रकृति (धातु या मूलशब्द) है- क् त् ल् = अर्थात् मारना । इसमें विभिन्न स्वरों अर्थात् प्रत्ययों को जोड़कर- क़तल = उसने मारा, कातिल = मारने वाला, कितल मारने वाला, कितल = आघात, किल्ल= शत्रु कुतिल = वह मारा गया तथा यक्तुलु = वह मारता है, आदि-आदि अनेक रूप बनाये जाते हैं।

(ii) इसी प्रकार 'क् त् ब्' धातु में स्वरों अर्थात् प्रत्ययों को जोड़कर -

'किताब' = पुस्तक कातिब = लिखने वाला, कुतुब = पुस्तकें, मकतब = सकूल, कुतबा = लेख, मकतूब = लिखित तथा मकतूबात = (लिखित का बहुवचन) आदि अनेक रूप बनते हैं ।

अन्तर्मुखी विभक्ति प्रधान भाषाओं में भी दो अवस्थाएँ दृष्टिगोचर होती हैं-

(3. क ।) संयोगात्मक - उदाहरण 'अरबी' भाषा ।

(3. ख) वियोगात्मक - उदाहरण 'हिब्रू भाषा ।

2. बहिर्मुखी विभक्तिप्रधान भाषाएँ: इसमें विभक्ति (प्रत्यय) प्रकृति के बाहर जुड़ती है। यह प्रकृति के पूर्व में भी जुड़ सकती है तथा बाद में भी । भारोपीय परिवार की भाषाएं संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता आदि इसी वर्ग की हैं। संस्कृत के कुछ उदाहरण दृष्टव्य है-

पठ् + ति = पठति । यहाँ ति प्रत्यय पठ् धातु से बाहर लगा है।

उपतिष्ठति = यहाँ उप उपसर्ग तिष्ठ् (स्था) धातु से पूर्व और ति प्रत्यय अन्त में प्रकृति से बाहर लगे हैं । रामाभ्याम् = यहाँ भ्याम् मूल प्रकृति राम से बाहर लगा है ।

i) संयोगात्मक :- संस्कृत

ii) वियोगात्मक :- हिन्दी

रामेण खाद्यते

राम के द्वारा खाया जाता है।

प्रश्लिष्ट या समासप्रधान भाषाएँ

(Incorporating Languages)

प्रश्लिष्ट से तात्पर्य है - प्रकर्ष रूप से चिपका हुआ (श्लिष्ट) । इन भाषाओं में प्रत्यय प्रकृति में इस प्रकार से समाविष्ट हो जाता है कि उसे पृथक रूप से पहचानना कठिन होता है। प्रकृति और प्रत्यय जुड़कर एक नया ही रूप बनता है जिसमें प्रकृति और प्रत्यय का अर्थ से ही अनुमान लगाया जा सकता है। इन भाषाओं को समास प्रधान भाषा भी कहते हैं । उत्तरी अमरीका की 'चेरोकी' भाषा, ग्रीनलैण्ड की 'एस्किमो' भाषा तथा पिरेनीज पर्वतमाला की 'बास्क' (Basque) भाषा इसी वर्ग की हैं ।

इन प्रश्लिष्ट या समासप्रधान भाषाओं के भी दो उपविभाग हैं-

1. पूर्ण प्रश्लिष्ट या पूर्णतया समासप्रधान भाषाएँ, तथा

2. आंशिक प्रश्लिष्ट या आंशिक समासप्रधान भाषाएँ ।

1. पूर्ण प्रश्लिष्ट या पूर्णतया समासप्रधान भाषाओं में प्रकृति तथा प्रत्यय आदि के रूप में, 'संज्ञा' 'सर्वनाम' 'विशेषण' आदि 'कर्ता', 'कर्म' तथा 'क्रिया' आदि सबको एक समान समस्त पद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। सम्पूर्ण वाक्य एक पद जैसा प्रतीत होता है, जिसे वाक्यपद भी कह सकते हैं। 'चेरोकी भाषा का यह प्रसिद्ध उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है-

नाधोलिनिन = हमारे लिए एक नौका लाओ।

इस उदाहरण में

नतेन = लाना (क्रिया)

अमोखोल = नौका (संज्ञा कर्म)

निन = हम (सर्वनाम, सम्प्रदान)

'नाधोलिनिन' में इन तीन पदों की कल्पना की गई है। वस्तुतः ये पद कहाँ किस रूप में समस्त हैं तथा उसमें किस अंश का क्या अर्थ है? यह जानना सम्भव नहीं है।

इसी प्रकार ग्रीनलैण्ड की 'एस्किमो' भाषा में भी:-

अउलिसरिअर्तोरसुअर्पोरक = वह मछली मारने के लिए जाने की शीघ्रता करता है।

इसमें भी शब्दों की कल्पना इस प्रकार की गयी है-

अउलिसर = मछली मारना (क्रिया) ।

पेअतर = किसी कार्य में लगना (सामान्य क्रिया) ।

पिन्नेसुअर्को = वह शीघ्रता करता है (सर्वनाम तथा क्रिया) ।

2. आंशिक प्रश्लिष्ट या आंशिक समासप्रधान भाषाएँ- वे हैं, जिनमें पूर्ण प्रश्लिष्ट की भाँति कर्ता, क्रिया, सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि सबका समास न होकर मुख्य रूप से सर्वनाम तथा क्रिया का ही समास होता है। फलतः इन भाषाओं में उतने बड़े-बड़े वाक्यपद प्राप्त नहीं होते हैं। पिरेनीज पर्वतमाला में बोली जाने वाली 'बास्क' भाषा ऐसी ही है। उसी भाषा से कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं-

- ✓ हर्कात् = मैं तुझे (सर्वनाम्) ले जाता हूँ (क्रिया) ।
- ✓ नकार्सु = तु मुझे (सर्वनाम) ले जाता हैं (क्रिया) ।

दकार्किओत् = मैं इसे उसके (सर्वनाम) पास ले जाता हूँ (क्रिया) ।

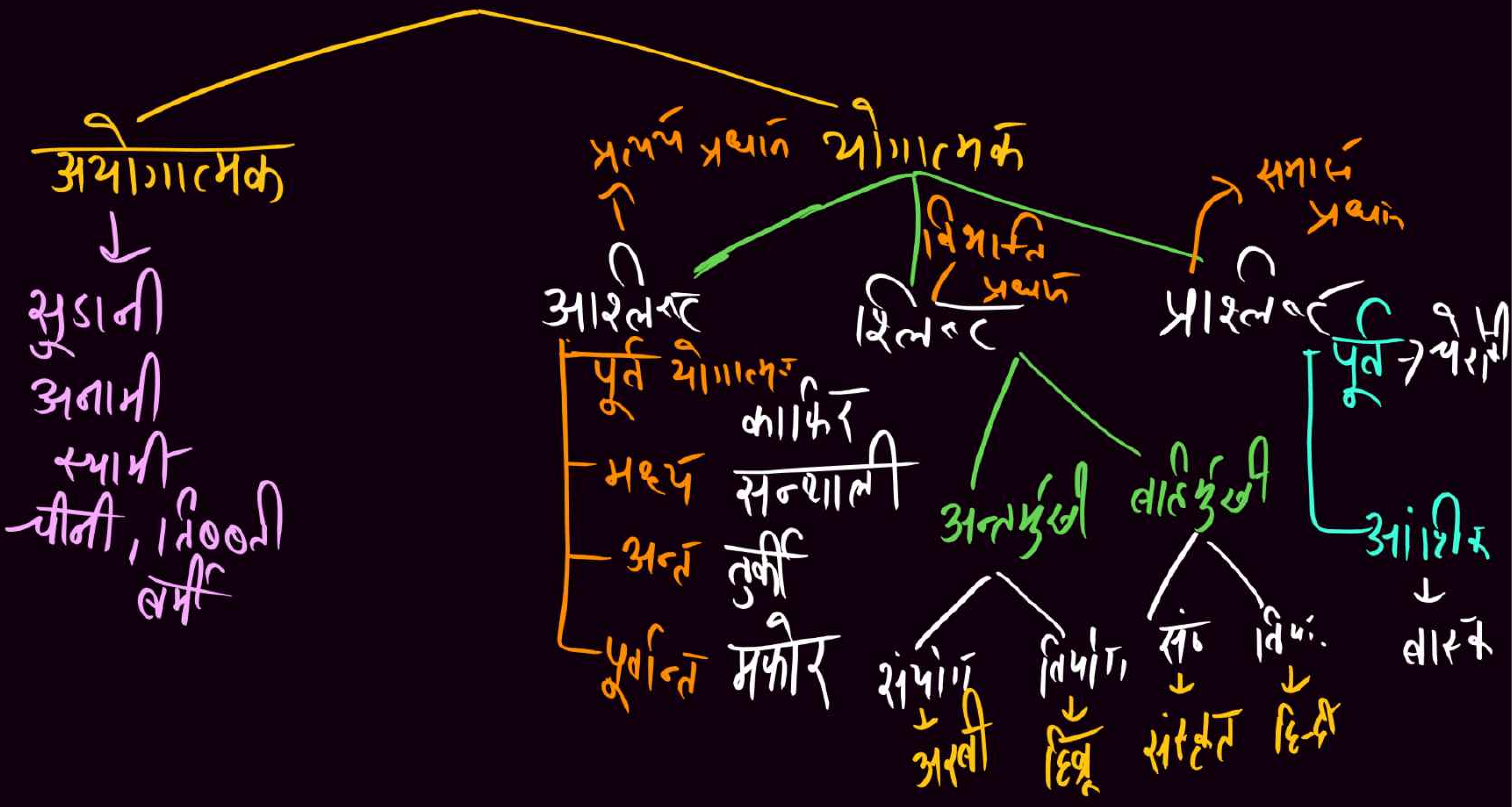

अयोगात्मक
सूडानी
अनामी
स्यामी
चीनी, तिब्बती
बर्मी
प्रत्यय प्रधान
योगात्मक
आश्लिष्ट
पूर्व योगात्मक
काफिर
मध्य
सन्थाली
अन्त
तुर्की
पूर्वान्त
मफोर
श्लिष्ट
विभक्ति प्रधान
अन्तर्मुखी
बहिर्मुखी
संयोगा.
अरबी
वियोगा.
हिब्रू
सं.
संस्कृत
वि.
हिन्दी
प्रश्लिष्ट
समास प्रधान
पूर्ण
चेरोकी
आंशिक
बास्क

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि उपर्युक्त भाषाओं में प्रायः सभी पद पूरे-पूरे वाक्यों के रूप में व्यवहृत होते हैं ।

आकृतिमूलक (रूपात्मक) वर्गीकरण की समीक्षा

आकृतिमूलक वर्गीकरण के उपर्युक्त चार रूप अत्यन्त स्थूल है । यद्यपि यह वर्गीकरण भाषा की सामान्य प्रवत्ति को जानने के लिए स्वीकार किया जा सकता है । परन्तु भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध को जानने के लिए यह वर्गीकरण उपयुक्त नहीं है । इस वर्गीकरण के अनुसार एक वर्ग में अनेक ऐसी भाषाएँ रखी गई हैं जो भौगोलिक दृष्टि से परस्पर बहुत दूर हैं और उनका परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार प्रत्यय प्रधान वर्ग की तुर्की, मुण्डा, द्रविड़ आदि में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त कोई भी भाषा किसी एक विशेषता का प्रतिनिधित्व नहीं करती उसमें अनेक विशेषताओं का समावेश है ।

1. चीनी भाषा इस प्रकार में आती है-

(A) VATISOLATING अयोगात्मक

(B) INCORPORATING प्रश्लिष्ट योगात्मक

(C) AGGLUTINATIVE अश्लिष्ट अयोगात्मक

(D) INFLECTIONAL श्लिष्ट योगात्मक

2. यह विभक्तिप्रधान भाषा है-

(A) संस्कृत

(B) तुर्की

(C) द्रविड

(D) चीनी

3. 'संस्कृतभाषा' अस्ति –

(A) AGGLUTINATIVE (अश्लिष्ट अयोगात्मक)

(B) INFLECTIONAL (श्लिष्ट योगात्मक)

(C) ISOLATING (अयोगात्मक)

(D) INCORPORATING (प्रश्लिट योगात्मक)

श्लिष्ट बहिर्मुखी संयोगात्मक

4. संस्कृतभाषा है-

(A) प्रत्ययप्रधान

(B) विभक्तिप्रधान

(C) अयोगात्मक

(D) समासप्रधान

5. एकाक्षरी भाषा है-

(A) तुर्की

(B) चीनी

(C) जर्मन

(D) अवेस्ता

6. आकृतिमूलक वर्गीकरण को इस नाम से भी जाना जाता है-

(A) ध्वनिवर्गीकरण

(B) रूपात्मक

(C) अभिधार्थक

(D) इनमें से कोई नहीं

7. (i) अयोगात्मकभाषायाः उत्तमोदाहरणमस्ति-

(ii) अयोगात्मकवर्गस्य प्रतिनिधिभाषाऽस्ति-

(A) सूडानी

(B) तोखारी

(C) चीनी

(D) स्यामी

8. अधोनिर्दिष्टेषु वियोगात्मकभाषा........।

(A) संस्कृतम्

(B) ग्रीक

(C) लॅटिन

(D) हिन्दी

9. भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण विषयक कौन- सा विकल्प सही है?

(A) योगात्मक, वियोगात्मक, संयोगात्मक, एकल

(B) अयोगात्मक, अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट

(C) श्लिष्ट, अश्लिष्ट, प्रश्लिष्ट, विश्लिष्ट

(D) चीनी, भारोपीय, द्रविड, लैटिन